

गुरु तेगबहादुर जी पूर्वी भारत की यात्राएं

डॉ. परमवीर सिंह

गुरु तेगबहादुर जी सिखों के नौवें गुरु थे. जिनके जीवन और कर्म में सेवा, संयम, भक्ति, वीरता और मानवाधिकारों की सुरक्षा के आदर्श परिलक्षित होते हैं। 15 रागों में 59 शब्द और 57 श्लोक मनुष्य के आध्यात्मिक विकास की दिशा निर्धारित करते हैं। गुरु जी की वाणी जीवन के आदर्श से भटके मनुष्य को, उच्चतम आध्यात्मिक स्तर तक पहुँचाने का मार्गनिर्देश करती है। गुरु जी समझाते हैं कि आसा, मनसा, काम, क्रोध, लोभ, मोह, अभिमान, निंदा, हर्ष, शोक आदि मनुष्य के मन को चंचल और कमजोर बनाते हैं और जब वह उनसे मुक्त हो जाता है तो मन में निर्भयता और निर्वैर भाव उत्पन्न होता है। सांसारिकता से दिव्य जीवन की यात्रा गुरु तेगबहादुर की बाणी का लक्ष्य है जिसके लिए निरंतर प्रयास की आवश्यकता होती है। यह कार्य असंभव नहीं है लेकिन जीवन में गुरु के मार्गदर्शन को लागू करके इसे संभव बनाया जा सकता है।

गुरु तेगबहादुर जी का जीवन और बाणी गुरु नानकदेव जी की शिक्षाओं और संदेश का विस्तार है। गुरु नानकदेव जी ने सुल्तानपुर की भूमि पर प्राप्त दिव्य संदेश को फैलाने और प्रचारित करने के लिए लंबी यात्राएँ कीं। गुरु जी किसी भी व्यक्ति, सत्ता, धर्मगुरु, तपस्वी, योगी, सरेवर के साथ चर्चा करते थे और उन्हें एक ईश्वर-उन्मुख जीवन जीने की प्रेरणा देते थे, यह संदेश उन्हें गुरु जी की संप्रभुता को स्वीकार करने के लिए प्रेरित करता था। गुरु नानकदेव जी की शिक्षाओं का प्रचार उनके उत्तराधिकारी गुरुओं द्वारा किया गया। गुरु नानकदेव जी के बाद, गुरु तेगबहादुर जी ने दिव्य संदेश के प्रसार और प्रचार के लिए लंबी यात्राएँ कीं।

गुरु तेगबहादुर जी ने सबसे अधिक पूर्व की यात्रा की। भट्ट वहियाँ बताती हैं कि गुरुजी ने दो बार पूर्व की यात्रा की और 1656 में, गुरु पद ग्रहण करने से पहले, उन्होंने पहली बार पूर्व की यात्रा की। गुरु हर राय के ज्योति ज्योत समाने के समय वह अपने परिवार के साथ पटना शहर में मौजूद थे। अधिक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि गुरु साहिब जी की स्मृति में उनके चरण छोह प्राप्त तीर्थ, उनके गुरु-गद्दी अपनाने के बाद हैं। ज्ञानी ज्ञान सिंह ने 'तवारिख गुरु खालसा' में गुरु तेगबहादुरजी के चरण छोह प्राप्त जिन स्थानों का उल्लेख किया है, वे इस प्रकार हैं-युगाना, अटावा, आनंदपुर (मखोवाल), अयोध्या, अली शेर, आगरा, आरा, अमृतसर, समाऊँ, समाना, साहिब गंज, साखी गोपाल, साबों की तलवंडी (दमदमा साहिब), सेखा, सैफाबाद (बहादुरगढ़, पटियाला), सोहिवाल, सासाराम, सुबैल, सुलीसर, सिग्रेडी, हरिद्वार, हडिआईया, कहिलगाँव, कटक, कनौर, कबुलपुर, करहाली, कलौड़, काशी (बनारस), कानपुर, कामरूप, कांची पुरी, कीरतपुर, कुंतल नगर, कैथल, कहु, करो, खटकड़, खडूर, खरक, ख्याला, खाना, खीवा, गया, गरना, गढ़गंगा, गागा, गुरखंजर पुर, गोइंदवाल, गोकल, गोबिंदपुरा, गंडू, घनोली, चिका, छपरा, जगन्नाथ पुरी (उड़ीसा), जींद, टहिलपुरा, टेक, ढाका, दिलयां, तरनतारन साहिब, थानेसर, दमदमा (ब्रह्मपुत्र नदी के किनारे रंगमाटी नगर के पास), दादू माजरा, धमधान,

धरम कोट, धोबिया बंदर, नन्हेडी, नलहट्टी, नौलखा, पहाआ, पटना, प्रयागराज, फरवाही, फर्नुखाबाद, बक्सर, बकाला (बाबा)), बनी बदर, बरहा, बलेउ, बारना, बालेश्वर, वृंदावन, बछौना, भरतगढ़, भागलपुर, भंदेशर, भीखी ढाब, भूपाल, भुवनेश्वर, मकसूदाबाद (मुर्शदाबाद), मकुरार, मथुरा, मदरापुर, मैसरखाना, मानकपुर (कड़ा), माल दो. मेदानी पुर, मुकारनपुर, मुंगेर, मुरादाबाद, मुणक, मुलोवाल, मिर्जापुर, मोरभंज, मोतीबाग (पटियाला) मौड़ रहेला, राजमहल, रोहतक, रोपड़, लखनऊ, लखनौर (अंबाला), लंग, लखन माजरा, लेल, वल्ला।

ज्ञानी ज्ञान सिंह ने उक्त रचना पाँच भागों लिखी जिसके पहले तीन भाग 1891 में सियालकोट से प्रकाशित हुए थे। इस काम का हिस्सा जो पाठकों और पुस्तकालयों के लिए आम देखने को मिलता है, वह भाषा विभाग, पंजाब द्वारा 1970 में प्रकाशित किया गया था। गुरु तेगबहादुर जी के चरण स्पर्श किये गये स्थानों का विवरण भी भाषा विभाग द्वारा प्रकाशित 'तवारीख गुरु खालसा' से लिया गया है। इस कृति में लगभग 120 स्थानों का वर्णन मिलता है। गुरु तेगबहादुर जी ने चरण स्पर्श स्थानों का विवरण दूसरी बार फौजा सिंह की पुस्तक 'गुरु तेगबहादुर: यात्रा के स्थान, परंपराएँ और स्मारक' नामक पुस्तक में मिलता है। इस पुस्तक में गुरु तेगबहादुर जी के लगभग 180 चरण छोह प्राप्त स्थानों का विवरण मिलता है। जैसे- उगानी, अगौल, अजराना कलां, आनंदपुर साहिब, अमानतसर (व्यास किनारे), अयोध्या, अरोड़ा, इलाहाबाद, अलीशेर कलां, अक्कड़, आगरा, आलोरख, अंबाला शहर, अमृतसर, इटावा, सासाराम, सठीयाला, समाना, समानौ, साहिब गंज, साबो की तलवंडी (दमदमा साहिब), सिंभरो, सील, सेखा, सुबल सुडेल, सोहिवाल, सोनीपत. संधेरी, शाहपुर, शेखूपुर, हरपालपुर, हरिद्वार, हकीमपुर, हीरो कलां, हडिआइया, कनकवाल भंगुआं, कबूलपुर-हसनपुर, कमालपुर, करहाली करतारपुर, करहा साहिब, कलूर, कारा मानकपुर, कानपुर, कालेके, कंझला, कीरतपुर साहिब, कैमल, कुराली, कोट धर्म कोटली, कंत नगर, कड़ू, खटकड़, खरक भूरा, खिआला कलां, खिया कलां, खेमकरण गया गढ़मुक्तेश्वर, गड़ी नजीर, गागा, गुनिक, गुरने कलां, गोविंदपुरा, गंडुआं, घराचों, धरु केवाली, चीका, चोला, चक्क गुरु, छाजली, जहांगीरपुर, जोद, जोगा, जौनपुर, झागुरी, झिवरहेडी, झुनीर (सीतलसर), टहिलपुरा, टल घनौड़ जुट्टां, टाहला साहिब, डरौली भाई की, ड्योढीसाहिब, डिख, ढाका, ढिलवाँ मौड़, तरनतारन, तरावडी, थानेसर (कुरुक्षेत्र), खुही, दातनसर, दिल्ली, दिडवा, दुलमिकी, दुगरी, दोदडा, दौलतपुर मालियान, धम्मधान साहिब, धलेउं (धलेवा), धूबडी, धौला (अडिसर), धरेडा साहिब, नशिमली और बहवालपुर, नागुरा, नन्हेरा, नन्हेडा, नवांशहर, नागरा, नाभा साहिब, निजामाबाद (आजमगढ़), नौलखा, नंदपुर, पटना साहिब, पटियाला, पलाही नगर, पिहोवा, पंदेशर, फगुवाला, फरवाही, बस्सी पठान, बहादुरगढ़, बहिर जच्छ, बेहड, बबान गढ़, बरहे, बनी-बदरपुर, बाड गाँव, बाबा बकाला, बारना, बिलासपुर, बीबीपुर खुर्द, बुड़ीया, बछौना, बबनपुर, बौद्ध गया, बुददमुर, भगड़ाणा, भरतगढ़, भवानीगढ़, भागलपुर, भीखी, भैणी बाग, भैणी मरहज, भूपाल, महिमपुर जहां, मकारपुर, मकोरड साहिब, मथुरा, मैसरखाना, मालदा, मिर्जापुर, मुंगेरबाद, मुंगर, मुनियरपुर, मूणक, मूलोवाल. मौड़ कलां, मग्गर साहिब, रहेडा माजरा, रायपुर, राज महल, राजो माजरा, रामगढ़ बौडां, रैली, रैलों, रुडे कलां, रोहटा, रोहतक, रोपड़, लखनौर साहिब, लाखन माजरा, लेहल कलां, लंग, लंगरछनी, वाराणसी (बनारस), वल्ला।

भाई संतोख सिंह, ज्ञानी ज्ञान सिंह और डॉ. फौजा सिंह ने उन स्थानों के बारे में बहुत विस्तृत जानकारी प्रदान की है जहाँ गुरु तेगबहादुरजी के चरण पड़े थे। इनके अलावा, कुछ अन्य गुरुमुखी स्रोत सामने आए

हैं जिनमें गुरु साहिब की यात्राओं के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। इन प्रमुख स्रोतों में यह पुस्तकें शामिल हैं-मालवा देश रटन की साखी पोथी (1843 से पहले); तारा सिंह नरोत्तम, श्री गुरु तीरथ संग्रह (1884); ज्ञानी ज्ञान सिंह, त्वरिख गुरुद्वारियाँ (तारीख नहीं); ज्ञानी ठाकुर सिंह, गुरुद्वारा दर्शन (1923); भाई काहन सिंह नाभा, गुरु शब्द रत्नाकर, महान कोष (1930); परदुमन सिंह बद्दों. गुरुधाम दीदार (1959), संपादक गुरदित सिंह; गुरुमुख सिंह, ऐतिहासिक सिख तीर्थ (1995), प्रो. हरबंस सिंह, एड-इन-चीफ, सिख धर्म का विश्वकोश, भाग चार (1992-1998); डॉ. जसबीर सिंह सरना और एस। दिलजीत सिंह, गुरुद्वारा कोष (2016), भाई धन्ना सिंह चहल पटियालवी, गुरु तीरथ साइकल यात्रा (2016) आदि पुस्तकों में गुरु तेगबहादुर जी के चरण छोह प्राप्त स्थानों का विवरण मिल जाता है। गुरु तेगबहादुर मार्ग, पंजाब नामक पुस्तक डॉ. यह सुखदयाल सिंह की कड़ी मेहनत का परिणाम है जिसमें उन्होंने गुरु जी के पंजाब से सम्बन्धित स्थानों का सर्वेक्षण-आधारित विवरण दिया है। स. विशाखा सिंह, सं. जीबी सिंह, डॉ. त्रिलोचन सिंह, एस. जोगिंदर सिंह जोगी, कैप्टन भाग सिंह, ज्ञानी फौजा सिंह, डॉ. कृपाल सिंह जैसे विद्वानों ने भी गुरु जी की यात्राओं के बारे में महत्वपूर्ण विवरण प्रदान किए हैं।

इन विद्वानों के लेखन के आधार पर प्राप्त जानकारी के अनुसार गुरु तेगबहादुर जी ने गुरु का पद ग्रहण करने के बाद माझा और दोआबा में बहुत कम समय बिताया। गुरु ने सबसे अधिक मालवा क्षेत्र की यात्रा की। मालवा में एक से अधिक गुरुओं की प्रचार यात्राओं का उल्लेख मिलता है। इस क्षेत्र में शायद ही कोई प्राचीन गाँव हो जहाँ गुरु न गए हों। इनमें से ज्यादातर गाँव मुसलमानों के थे, जिन्हें 1947 के भारत-पाक विभाजन के दौरान खाली कराया गया था और ये पाकिस्तान से आए शरणार्थियों के घर हैं। सैफाबाद, हसनपुर-कबूलपुर, गढ़ी नजीर, समाना, नाभा साहिब आदि मालवा की भूमि पर कुछ ऐसे गाँव हैं जहाँ गुरु तेगबहादुर के पदचिन्ह हैं जो मुसलमानों के साथ गुरु जी के संवाद का प्रतीक हैं।

पंजाब के बाहर, वर्तमान हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल, बांग्लादेश और असम में गुरुजी के चरण छोह प्राप्त स्थान हैं। गुरु तेगबहादुर जी ज्यादातर उन क्षेत्रों का दौरा करते थे जहाँ गुरु नानक पहले यात्रा कर चुके थे। जिन क्षेत्रों में गुरु ने पूर्व की यात्रा की थी, उन क्षेत्रों में सिख उपदेश ने गति प्राप्त की थी। गुरु की बाणी हिंदी और ब्रज भाषा से काफी प्रभावित है, जिससे पता चलता है कि गुरु ने अपनी अधिकांश बाणी की रचना उन क्षेत्रों में अपने अभियान के दौरान की थी। दिल्ली के पूर्व में जिन स्थानों पर गुरु के पदचिन्ह पाए जाते हैं, उनका विवरण इस प्रकार है:-

उत्तर प्रदेश

मथुरा: भारत के इस प्राचीन शहर का हिंदू धर्म में खास स्थान है। दिल्ली से दक्षिण की ओर उत्तर प्रदेश से गुजरने वाली सभी ट्रेनें यहाँ रुकती हैं। ऐसा कहा जाता है कि श्री कृष्ण जी का जन्म यहाँ द्वापर युग में हुआ था और उनकी याद में एक प्रसिद्ध मंदिर है। गुरु नानक देव जी से यह शहर सिख धर्म से जुड़ा है। पूर्व की यात्रा के दौरान गुरु तेगबहादुर ने भी इस शहर का दौरा किया था, जिनकी स्मृति में दो मंदिर स्थित हैं:

गुरुद्वारा गुरु तेगबहादुर जी, गौ घाट: मथुरा में यह मंदिर कंस टीला के पास गौ घाट के तट पर स्थित है। इस विषय में जानकारी देते हुए ज्ञानी ज्ञान सिंह कहते हैं कि कड़े मानकपुर से चलते हुए गुरु जी धीरे धीरे मथुरा शहर, कंस टीला के पास पहुँचे, जहाँ अब गुरु जी का स्थान है। साथियों की इच्छा के अनुसार वृंदावन गोकुल आदि कृष्ण लीला के सभी स्थानों का भ्रमण किया। बिसरांत घाट जमना इसनान-दान किया, तीन रात रुके। यह स्थान अभी भी मौजूद है लेकिन लुप्त होने के कगार पर है। जिस स्थान पर श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी विराजमान थे, उस स्थान पर बाबा श्रीचंद जी की मूर्ति है। इस जगह पर कुछ कमरे हैं जहाँ उदासी महंत रहते हैं। संगत के अभाव में यह स्थान काफी जर्जर स्थिति में है।

गुरुद्वारा गुरु तेगबहादुर जी श्री गुरु सिंह सभा: यह मंदिर मथुरा रेलवे स्टेशन से लगभग 2 किमी दूर बाजार में स्थित है। सिंह सभा के प्रभाव के कारण, इस गुरुधाम को गुरुद्वारा गुरु तेगबहादुर श्री गुरु सिंह सभा के रूप में जाना जाता है। यह गुरु नानकदेव जी, गुरु हरगोबिंद साहिब जी, गुरु तेगबहादुर जी और गुरु गोबिंद सिंह जी की चरण छोह प्राप्त स्थान है। भाई गुरदास जी भी इस स्थान पर सिख धर्म का प्रचार करने आए थे। गुरु गोबिंद सिंह जी के महल (पत्नी) माता सुंदरी जी और माता साहिब कौर जी भी दिल्ली में अपने प्रवास के दौरान इस स्थान पर आया करते थे। 1942 में, सिंह सभा ने एक उदासी संत से गुरु तेगबहादुर जी के स्मारक का अधिग्रहण किया और यहाँ एक नया भवन बनाया गया। सिंह सभा समिति गुरुधाम का प्रबंधन करती थी लेकिन 1984 के बाद से चीजें बदल गई हैं। वर्तमान में गुरुधाम का प्रबंधन मलिक अरोड़ा की अध्यक्षता वाली एक स्थानीय समिति द्वारा किया जाता है।

आगरा:

यमुना नदी के तट पर बसा एक प्रमुख शहर आगरा, सुल्तानों और मुगलों के शासनकाल के दौरान भारत की राजधानी थी। पूर्व की यात्रा के दौरान गुरु तेगबहादुर इस शहर में पहुँचे। गुरु की स्मृति में दो गुरुधाम हैं:-

1. गुरुद्वारा माईथान: आगरा के घनी आबादी वाले इलाके में स्थित यह गुरुद्वारा माई जस्सी का घर था जिन्हें दर्शन देने के लिए गुरु तेगबहादुर जी आए थे। उन्होंने गुरु तेगबहादुर को अपने हाथों से बने कपड़े का थान भेंट किया था, जिसके कारण इस स्थान का नाम 'गुरुद्वारा माईथान' प्रसिद्ध हो गया। यहाँ एक प्राचीन ताजे पानी का कुआँ भी है। गुरु ग्रंथ साहिब एक बड़े हॉल के कमरे में विराजमान है और एक अन्य बहुमंजिला हॉल संगतों की जरूरतों के अनुसार बनाया गया है। गुरुधाम का प्रबंधन आगरा सिख संगत की एक निर्वाचित समिति द्वारा किया जाता है।

2. गुरुद्वारा गुरु का ताल: यह गुरुद्वारा दिल्ली से लगभग 230 किमी दूर दिल्ली-ग्वालियर मुख्य सड़क पर आगरा के बाहरी इलाके में स्थित है। इस जगह से जुड़ा एक किस्सा है कि पास के गाँव कांकरेता में रहने वाले एक मुस्लिम हसन अली की दो बेटियों की शादी हुई थी। वह उनकी शादी को लेकर चिंतित था। एक दिन जब वह पशु चरा रहा था, गुरु तेगबहादुर जी उनके पास आए और भूख का हवाला देते हुए उनसे

कुछ खाने के लिए लाने को कहा। गुरु ने उसे अपनी कीमती अंगूठी और शॉल के साथ बाजार भेज दिया ताकि वह इन वस्तुओं को बेच सके और खाने के लिए कुछ ला सके। जब हसन अली दुकान पर पहुँचे और कीमती सामान बेचना चाहा तो दुकानदार हैरान रह गया। चोरी के संदेह पर उसने पुलिस में रिपोर्ट दर्ज कराई और मामला अंततः गुरु तेगबहादुरजी तक पहुँच गया, जो उस समय की सरकार के अत्याचार और उत्पीड़न के खिलाफ गिरफ्तारी देने आगरा गए थे। गिरफ्तारी करने से पहले, गुरु ने हसन अली से उनकी गिरफ्तारी के लिए निर्धारित पुरस्कार राशि के साथ करने के लिए कहा, जिससे वह अपनी बेटियों की शादी कर सके। गुरु की याद में यहाँ एक सुंदर गुरुधाम सुशोभित है। मुख्य सड़क पर होने के कारण यहाँ बड़ी संख्या में सिख संगत रुकती है। ठहरने और लंगर की समुचित व्यवस्था की गई है। संत बाबा निरंजन सिंह जी और बाबा प्रीतम सिंह जी संगत के सहयोग से इस स्थान की सेवा कर रहे हैं और एक गुरुमत संगीत विद्यालय भी चलाया जा रहा है।

इटावा: यमुना नदी के किनारे बसा यह प्राचीन शहर गुरुद्वारा गुरु का ताल आगरा से लगभग 135 किमी की दूरी पर स्थित है। पूर्व की यात्रा के दौरान गुरु तेगबहादुर इस शहर में आए थे। इस स्थान पर दो शिविर हैं जिनका प्रबंधन उदासी द्वारा किया जाता था। डॉ. फौजा सिंह बताते हैं कि "एक डेरे का प्रबंधन महंत बाबा ठाकुर दास के पास था और दूसरे का प्रबंधन महंत भगवान यमना दास के अधीन था। दूसरा डेरे को गुरु तेगबहादुर जी के चरणों की छोह प्राप्त में है। गुरुमुख सिंह बताते हैं कि "जिस स्थान को गुरुजी के चरण छोह प्राप्त है उसे गुरुद्वारा पूर्वी टोला कहा जाता है। इसका प्रबंधन स्थानीय संगत द्वारा किया जाता है।

कानपुर: उत्तर प्रदेश का एक शहर, भारतीय रेलवे का एक प्रमुख स्टेशन है। गुरु तेगबहादुर जी ने 1665-66 में पूर्व की ओर प्रचार यात्रा के दौरान इस शहर का दौरा किया था। इस कस्बे में गुरु जी का स्मारक मौजूद है। बीसवीं सदी के शुरुआती दौर में संत प्रद्युमन सिंह ने इसकी देखभाल आरम्भ की और अब यह एक विशाल भवन का रूप ले चुकी है। इसका संचालन स्थानीय कमेटी करती है।

कड़ा: प्राचीन लेखों में कहा गया है कि कड़ा गाँव को गुरु तेगबहादुर जी का चरण स्पर्श मिला है। गुरुमुखी सूत्रों में इसका नाम कड़ा मानकपुर मिलता है। भाई संतोख सिंह बताते हैं कि पूर्व की यात्रा के दौरान गुरुजी इस गाँव में आए थे:

कड़े सु मानिकपुर के काहु।

गमने सतगुरु बेपरवाह।।

इस शहर में, गुरु की मुलाकात एक लंबे समय तक रहने वाले वैष्णव संत संत मलुक दास से हुई। यह हिंदू और मुसलमानों द्वारा पूजनीय था। गुरु तेगबहादुर जी को देखकर उन्हें आश्चर्य हुआ कि गुरु नानक देव जी के ये उत्तराधिकारी शाही पोशाक क्यों पहनते हैं। ये हथियार क्यों रखते हैं? और शिकारी क्यों खेलते हैं? गुरु ने वैष्णव ऋषि को समझाया कि भगवान आत्मा के सहयोग से किए गए कर्म कल्याणकारी हैं। गुरु के साथ चर्चा करने के बाद, उनके सभी संदेह दूर हो गए। महिमा प्रकाश कहती हैं:

संत बनने के कई तरीके हैं।

यह कलयुग मेरा गुरु अवतार है।

इस नगर में गुरु जी संत मलूक दास को मिले थे, जोकि लम्बी उम्र वाला एक वैष्णव साधू था। हिन्दू और मुसलमान उसका आदर करते थे। गुरु तेगबहादुर जी के दर्शन करके इसके मन में शंका पैदा हुई कि गुरु नानक देव जी के यह उत्तराधिकारी धर्मात्मा पुरुष शाही लिबास क्यों धारण करते हैं? और शिकार क्यों खेलते हैं? वैष्णव साधू को गुरु जी ने समझाया कि प्रभु-भावना से जुड़ कर किये गये कार्य कल्याणकारी होते हैं। गुरु जी के साथ विचार-चर्चा करके इसकी समस्त शंका दूर हो गई। महिमा प्रकाश में बताया गया है कि

निज मुनि मन मो कीन विचारा।

मिटी संक भई बुध उजियारा।

संतन रहनी अनक प्रकारा।

यह कलजुग मो गुर अवतारा।

यहाँ सिख संगत की स्थापना हो गई थी लेकिन यहाँ कोई

गुरु-स्थान नहीं है। मलूक दास की समाधि अभी भी है।'

अयोध्या: भारत का यह प्राचीन शहर हिंदू धर्म का एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थल है जहाँ कहा जाता है कि श्री रामचंद्र जी का जन्म हुआ था। पूर्व की यात्रा के समय गुरु नानकदेव जी इस नगर में आए थे और आम लोगों को कर्मकांड को त्यागने और भगवान के साथ जुड़ने का आह्वान किया था। इस शहर में गुरु नानकदेव जी के बाद गुरु तेगबहादुर जी और गुरु गोबिंद सिंह जी के आगमन का उल्लेख मिलता है। सरयू नदी के किनारे ब्रह्मकुंड में गुरुओं की याद में गुरुद्वारा ब्रह्मकुंड मौजूद है। इस स्थान पर गुरु जी ने एक ब्राह्मण भक्त को अपनी खड़ाऊँ दी थीं, जोकि गुरुद्वारा साहिब में संरक्षित हैं।

निजामाबाद: आजमगढ़ जिले में स्थित यह नगर गुरु नानकदेव जी और गुरु तेगबहादुर जी की चरण छोह प्राप्त है और उनकी याद में गुरुद्वारा चरण पादुका साहिब पातसाही पहली और पातसाही नीवी स्थित हैं। दोनों गुरु साहिब की खड़ाऊँ यहाँ संरक्षित हैं। ऐसा कहा जाता है कि जब गुरु तेगबहादुर जी ने इस स्थान को छोड़ कर जाने लगे तो संगत के अनुरोध पर उन्होंने अपनी खड़ाऊँ यहाँ छोड़ दी। गुरु तेगबहादुर जी की याद में यहाँ 'तप-स्थान गुरु तेगबहादुर जी' भी मौजूद है। एक प्राचीन कुआँ संरक्षित है जिसके बारे में कहा जाता है कि यह गुरु जी द्वारा बनवाया गया था। इस गुरुद्वारा में 30 से अधिक पांडुलिपियाँ हैं, जिनमें गुरु ग्रंथ साहिब और दशम ग्रंथ साहिब शामिल हैं। गुरुधाम का प्रबंधन बाबा प्रीतम सिंह द्वारा

किया जाता है, जो स्थानीय लोगों के सहयोग से आगरा में गुरु का ताल की सेवा करते हैं। पुराना रूप बाकी है। लंगर और रहने की व्यवस्था है।

जौनपुर : गोमती नदी के तट पर स्थित यह स्थान बनारस से लगभग 58 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। पूर्व की यात्रा पर इस शहर में आए थे। और उनकी याद में यहाँ गुरुद्वारा गुरु तप-स्थान श्री गुरु तेगबहादुर जी सुशोभित है। पंजाब से पूर्व की यात्रा पर जाते हुए गुरु तेगबहादुर ने बनारस में डेरा डाला और जौनपुर की संगत उनके दर्शन करने के लिए आई। संगत में भाई गुरुबखश भी उपस्थित थे जिन्होंने गुरु की उपस्थिति में बहुत मधुर और सुरीला कीर्तन किया। इसका जिक्र करते हुए ज्ञानी ज्ञान सिंह बताते हैं:

इक गुरुबखश नाम प्रेमी सिख।

कीर्तन. गुरहि सुनायो।

खुशी होए गुर तिस को बखस्यो

निज मिरदंग सुहायो।

पटना साहिब से पंजाब वापस आते समय, गुरु तेगबहादुर इस शहर में आए और इस स्थान पर निवास किया। भोर में गोमती नदी में स्नान करने के बाद, गुरु ने भगवान की बंदगी की। जिससे यह गुरु जी के तप-स्थान के रूप में प्रसिद्ध हो गया। दरबार हॉल के बगल में गुरु जी का तप-स्थान बना हुआ है। इस स्थान पर श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का एक प्राचीन रूप और एक तीर संरक्षित है।

इलाहाबाद: उत्तर प्रदेश में एक प्रसिद्ध हिंदू तीर्थ स्थल है। जिसे मूल रूप से प्रयाग कहा जाता था, लेकिन बादशाह अकबर द्वारा इसका नाम बदलकर इलाहाबाद कर दिया गया। हिंदू धर्म का यह प्रसिद्ध तीर्थ गंगा और यमुना का संगम है और कहा जाता है कि सरस्वती नदी भी गुप्त रूप से यहीं मिलती है। गुरु तेगबहादुर 1666 में पूर्व की यात्रा पर यहाँ आए थे। गुरु जी के समय में यहाँ जो संगत बनी थी, उसे पक्की संगत कहा जाता था जो इस गुरुधाम के नाम से जुड़ी थी। इस स्थान पर एक प्राचीन कुआं है जो गुरु जी के समय का बताया जाता है। भाई कान्ह सिंह नाभा बताते हैं, "इस नगर के अयोध्या महल में श्री गुरु तेगबहादुर जी का गुरुद्वारा 'पक्की संगत' के रूप में प्रसिद्ध है, जिसका प्रबंध निर्मला संतों के अखाड़े द्वारा किया जाता है।" गुरुधाम का रखरखाव निर्मल संप्रदाय के महंत प्रीतम सिंह और महंत दीदार सिंह करते हैं और महंत ज्ञान सिंह वर्तमान में यह सेवा कर रहे हैं।

अहरौरा : बनारस से करीब 50 किलोमीटर दूर मिर्जापुर जिले का एक कस्बा अहरौरा गुरु तेगबहादुर जी की याद दिलाता है। गुरु तेगबहादुर यहाँ पूर्व की यात्रा पर आए थे। गुरु जी ने यहाँ एक पौधा लगाया था जिसने कालांतर में बगीचे का रूप धारण कर लिया। गुरु जी द्वारा लगाए गए बगीचे की याद में यहाँ 'गुरुद्वारा बाग श्री गुरु तेगबहादुर साहिब' यहाँ सुशोभित है।

गुरुद्वारा बड़ी संगत श्री गुरु तेगबहादुर, नीची बाग: बनारस के नीची बाग इलाके के पास भौरे मुहल्ले में यह गुरुद्वारा स्थित है। जब गुरु तेगबहादुर इस शहर में आए, तो वहाँ पहले से ही एक सिख संगत थी, जिसे बड़ी संगत भी कहा जाता था, भाई कलियाना यहाँ के मसंद थे। स्थानीय परंपरा के अनुसार, यहाँ रहने के दौरान, गुरु जी अमृत के समय स्नान करते थे और फिर प्रभु बंदगी करने के लिए भाई कल्याण द्वारा निर्मित भोरे में चले जाते थे। गुरु जी का यह बंदगी स्थान आज भी मौजूद है। यहाँ गुरु साहिब का एक चोला और खडाऊँ भी यहाँ संरक्षित हैं जिनके दर्शन संगत को करवाए जाते हैं। भाई कल्याण का घर एक गुरुद्वारा बन गया था, जिसकी सेवा महाराज रणजीत सिंह और पटियाला के महाराजा ने करवायी थी। इस गुरुधाम के बारे में जानकारी देते हुए भाई कान्ह सिंह नाभा कहते हैं, "महाराजा नरेंद्र सिंह पटियालापति ने 1911 में बहुत पैसा खर्च करके एक शीश महल बनाया और दो रुपये का दैनिक लंगर लगवाया। गुरुद्वारे की आमदनी कुछ घरों के किराए से और कुछ लेखूपुरा गाँव से आती है। पुजारी भाई इस्सर सिंह जी निहंग हैं जिन्होंने बड़ी मेहनत से लोगों के हाथ गई गुरुद्वारा की याद को वापस पाने की पहल की है। पटना साहिब से आनंदपुर साहिब वापस आते समय माता गुजरी जी बाल गोबिंद राय (गुरु गोबिंद सिंह जी) और उनके परिवार के अन्य सदस्य यहाँ आए थे। गुरु गोबिंद सिंह के बचपन के चरणों की जोड़ी भी यहाँ संरक्षित है।

गुरुद्वारा छोटी संगत, बनारस: बनारस में यह गुरुद्वारा एक घर में स्थित है। इस गुरुधाम के बारे में जानकारी देते हुए गुरुमुख सिंह का कहना है कि दशाश्वमेध रोड से भूतेश्वर गली तक सड़क पर यह गुरुधाम स्थित है। " थोड़ी गिनती में सिख संगत इस स्थान पर आती थी इस कर्ण इसका नाम 'गुरुद्वारा छोटी संगत' पड़ गया।

छोटा मिर्जापुर : मिर्जापुर जिले का यह कस्बा बनारस से करीब 15 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। 1666 में पूर्व में अपने अभियान के दौरान गुरु तेगबहादुर जी कुछ समय के लिए इस स्थान पर रुके थे। उनकी स्मृति में यहाँ गुरुद्वारा श्री श्री गुरु तेगबहादुर नौवीं पातशाही स्थित है।

बनारस: गंगा नदी के तट पर स्थित यह हिंदू धर्म का प्रसिद्ध नगर वाराणसी के नाम से भी जाना जाता है। धार्मिक शिक्षा का केंद्र होने के कारण इसे काशी भी कहा जाता है। इस शहर में गुरु नानकदेव जी और गुरु तेगबहादुर जी के चरण छोह प्राप्त स्थान हैं। 1666 में आनंदपुर साहिब से पूर्व की यात्रा पर जाते हुए गुरु तेगबहादुर जी इस शहर में आए थे। उनकी चरण छोह प्राप्त स्थानों का विवरण इस प्रकार दिया गया है:

यह स्थान गुरु तेगबहादुर और बाल गोबिंद राय (गुरु गोबिंद सिंह) की चरण छोह प्राप्त हैं।

1. बिहार

सासाराम

यह बिहार का पहला स्थान है जहाँ गुरु तेगबहादुर जी की चरण छोह प्राप्त स्थान हैं।

1. गुरुद्वारा चाचा फग्गू मल्ल सासाराम का यह गुरुधाम चाचा फग्गू मल्ल के गुरु तेगबहादुर जी के प्रति श्रद्धा का प्रतीक है। इसके बुजुर्गों ने गुरु नानक के समय में सिख धर्म अपनाया था और गुरु जी की प्रचार यात्रा के दौरान यह मसंद था। जब गुरु तेगबहादुर जी पूरब की यात्रा पर गए तो वे बहुत बूढ़े हो गये थे लेकिन गुरुजी के दर्शन की उनकी तीव्र इच्छा थी। गुरु ने उनकी इच्छा पूरी कर दी। बनारस से आते हुए गुरुजी ने इसके घर में चरण डाले थे। यहीं पर स्थानीय संगत गुरु जी के दर्शन करने आई थी। कहा जाता है कि यहाँ एक शिला पर बैठ कर गुरुजी ने स्नान किया था। चाचा फग्गू मल्ल का एक सिमराना, एक छोटा स्मारक द्वार (45'x35') और खडाऊँ इस गुरुद्वारे की विरासत का हिस्सा हैं। इसके अतिरिक्त एक ऐतिहासिक बेरी और कुछ प्राचीन हथियार भी हैं। कहा जाता है कि बेरी को गुरु ने अपने हाथों से लगाया था जो वर्तमान समय में एक विशाल रूप ले चुका है और संगत द्वारा इसके बेर प्रसाद के रूप में ग्रहण किये जाते हैं।

2. गुरुद्वारा टकसाली संगत सासाराम में यह स्थान चाचा फग्गू मल्ल के गुरुद्वारे के पास स्थित है। स्थानीय परंपरा में उल्लेख है कि यहाँ गुरु जी का घोड़ा रुका था और इस स्थान पर गुरुजी के चरण पड़े थे। यह स्थान माई जियो जी का खेत था जो गुरु जी के स्मारक के रूप में मौजूद है। गुरुद्वारा साहिब में माता जी की तस्वीर के नीचे लिखा है, "स्वर्गीय जीओ माता जी जिन्होंने अपनी भूमि श्री गुरु तेगबहादुर जी के शुभागमन की खुशी में गुरुद्वारा टकसाल संगत के निर्माण हेतु दान किया, सम्बत 1723 विक्रमी । 2016 में कार-सेवा के माध्यम से यहाँ गुरुधाम की नयी ईमारत बनवायी गई।"

3. गुरुद्वारा गुरु का बाग: यह स्थान भी सासाराम में स्थित है। यह स्थान गुरुद्वारा चाचा फग्गू मल्ल से लगभग दो किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। जब गुरु तेगबहादुर जी इस शहर में आए तो उन्होंने इस जगह पर अपना घोड़ा बांधा था। वर्तमान समय में भी संगत की इस स्थान के प्रति बहुत मान्यता है और जब किसी की मनोकामना पूरी होती है तो वे यहाँ घोड़ा अर्पित करते हैं। उदासी महंत इसका प्रबंधन करते हैं।

गया: फल्गू नदी के तट पर स्थित यह हिंदू धर्म का एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थल है। यहाँ लोग पितरों के पिंड भरनेके लिए आते हैं। यह शहर गुरु नानक देव जी और गुरु तेगबहादुर जी के चरण छोह प्राप्त हैं। जब गुरु तेगबहादुर इस शहर में आए, तो पंडितों ने भी उन्हें पितृ क्रिया करने के लिए कहा। यहाँ बाणी को पढ़ने और सुनने का महत्व समझाते हुए गुरु जी ने कहा कि गुरबानी से जुड़ने पर किसी भी अनुष्ठान की आवश्यकता नहीं है। इस स्थान को रखरखाव की जरूरत है।

पटना साहिब

गह पूर्व में सिख धर्म का एक प्रमुख केंद्र है। शहर में तख्त साहिब की मौजूदगी से सिख धर्म का महत्व और बढ़ गया है। इस शहर में गुरु नानकदेव जी, गुरु तेगबहादुर और गुरु गोबिंद सिंह के चरण छोह प्राप्त स्थान हैं।

1. गौ घाट: गुरु तेगबहादुर जी जब गया से पटना साहिब गए तो सबसे पहले इसी स्थान पर निवास किया। इससे पहले गुरु नानक देव जी इस स्थान पर आ चुके थे। गुरुद्वारा गौ घाट गुरु नानक देव जी और गुरु तेगबहादुर जी की याद दिलाता है। एक छोटी-सी खिड़की, एक पेड़, दो लकड़ी के खंभे और एक प्राचीन चक्की गुरु जी की याद दिलाते हैं। सालिस राय जौहरी के स्थान पर मौजूद मसंद गुरु जी को बेनती कर अपने घर ले गया था।

2. तख्त श्री हरमंदिर जी, पटना साहिब: यह स्थान गुरुद्वारा गाय घाट से लगभग साढ़े तीन किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। तख्त श्री हरमंदिर जी पटना साहिब के नाम से प्रसिद्ध इस स्थान पर गुरु नानकदेव जी की चरण छोह प्राप्त है। सालिसराय जौहरी ने गुरु जी का सिख बन कर अपने घर को एक धरमसाल बना लिया था, जोकि अब तख्त साहिब के रूप में सिखों के एक केन्द्रीय प्रचार स्थान के रूप में प्रसिद्ध है। यह स्थान गुरु तेगबहादुर जी की चरण छोह प्राप्ति से सम्मानित है। अपने परिवार को यहीं पर छोड़कर गुरु जी असम की यात्रा पर निकल पड़े।

3. गुरुद्वारा गुरु का बाग: यह गुरुद्वारा गुरु तेगबहादुर जी और बाल गोबिंद राय (गुरु गोबिंद सिंह) जी के मिलन की याद दिलाता है। कहा जाता है कि यह पटना के रहीम बख्श और करीम बख्श का बाग था। भाई काहन सिंह नाभा कहते हैं, "यह पटना कब्रिस्तान के पास काजी का बगीचा था। जब गुरु तेगबहादुर साहिब पटना आए, तो काजी ने यह उपहार दिया। बंगाल और असम में अपने अभियान के लगभग चार साल बाद, जब गुरु तेगबहादुर जी ने पटना लौटने के बाद, उन्होंने इस बगीचे में डेरे डाले। बगीचा सूखा था। लेकिन गुरु के निवास के बाद यह हरा-भरा हो गया। यहीं पर पटना साहिब की संगत ने गुरु के दर्शन करना शुरू किया और पहले गुरु तेगबहादुर जी की माता नानकी, महिल (पत्नी) माता गुजरी जी और साहिबजादा गोविंद राय जी इस बगीचे में पहुँचे थे। यहीं पर गुरु जी की पहली मुलाकात अपने पुत्र (गुरु) गोबिंद (सिंह) से हुई थी। गुरुद्वारा गुरु का बाग यहाँ गुरु जी की स्मृति में सुशोभित है।

मुंगेर : पटना साहिब से बाढ होते हुए गुरु तेगबहादुर जी मुंगेर पहुँचे। उनकी याद में यहाँ गुरुद्वारा पक्की संगत मौजूद है। इस जगह के बारे में जानकारी देते हुए एक पत्थर पर लिखा है कि "इस गुरुद्वारे को 1934 में क्षतिग्रस्त कर दिया गया था और 1935 में इसे महंत बाबा रामदास जी उदासी संत ने फिर से बनवाया था।" इस स्थान पर गुरु ग्रंथ साहिब जी का प्रकाश किया जाता है। गुरु ग्रंथ साहिब जी की दो प्राचीन हस्त लिखित पांडुलिपियाँ भी हैं जो बहुत पुरानी हैं। सिख आबादी नगण्य है और गुरुधाम का प्रबंधन महंत द्वारा किया जाता है। स्थानीय सिख महंत पर गुरुधाम के रखरखाव को लेकर मुकदमा कर रहे हैं और कहा जाता है कि अदालत ने स्थानीय सिखों के पक्ष में फैसला सुनाया है।

भागलपुर : गुरु तेगबहादुर जी के मुंगेर से भागलपुर आने का जिक्र मिलता है। यहाँ गंगा नदी के बूझनाथ घाट के दाहिने किनारे पर गुरु जी की याद में गुरुद्वारा श्री गुरु तेगबहादुर बड़ी संगत सुशोभित है। भाई धन्ना सिंह चहल पटियालवी ने 18 मार्च, 1931 में इस गुरुद्वारे के दर्शन किये थे। इस गुरुधाम के बारे में जानकारी देते हुए वे कहते हैं, "भागलपुर शहर का गुरुद्वारा जिसका नाम 'गुरु की बड़ी संगत' है।

भागलपुर जिले में गंगा नदी के पार गुसाई गाँव नामक एक सलेम गाँव था। इस गाँव की जमीन 1484 बीघा है। गुरु का गाँव लेने वाले का नाम है-राम गुलाम छाऊ और यह पर्वता कस्बे का रहने वाला है। महंत जी ने गुरुद्वारों की भी नीलामी करने की कोशिश की। लेकिन पंडित (केदारनाथ झा) ने बहस करके रख लिया। गुरु का स्थान मानकर पंडित जी ने अपने आराम के लिए झगड़ा करके उदासी साधक से गुरुद्वारे को रख लिया। क्योंकि पंडित जी मजिस्ट्रेट साहब के पास अहलमद हैं इसलिए गुरुद्वारा का मुकदमा जीत लिया गया है। नहीं तो इसे नीलाम कर दिया जाता।" वर्तमान में सिंधी, सहजधारी और कुछ गुरसिख परिवार मिलकर इस गुरुद्वारे की देखरेख करते हैं।

गुरुद्वारा बड़ी संगत से लगभग आधा किलोमीटर दूर गली मथुरा नाथ, मोहल्ला बुरहाननाथ घाट स्थित है। इसका संचालन महंत करते हैं। यह महंत गृहस्थ जीवन व्यतीत करता है और यह परिवार अपने पूर्वजों के समय से ही इस स्थान की देखभाल करता आ रहा है। इस गुरुधाम में गुरु ग्रंथ साहिब जी की हस्तलिखित बोड़ (पाण्डुलिपि) विराजमान है जिसका प्रकाश किया जाता है। गुरु नानक देव जी का ज्योति ज्योत पर्व मनाया जाता है, इस दिन लंगर किया जाता है।

लच्छमीपुर : कटिहार जिले का एक कस्बा लच्छमीपुर गुरु तेगबहादुर की याद दिलाता है। गुरु जी पूरब की यात्रा के दौरान इस शहर में आए थे और उनकी याद में गुरुद्वारा श्री गुरु तेगबहादुर सुशोभित हैं। काडागोला रेलवे स्टेशन इस गुरुद्वारे से लगभग 2 किमी की दूरी पर अमृतसर-कटिहार रेलवे लाइन पर स्थित है। पंजाब के यात्री इस रेलवे स्टेशन पर उतरते हैं और गुरुद्वारा साहिब के दर्शन करते हैं।

लच्छमीपुर में बड़ी संख्या में सिख संगत होने के कारण इसे सरदार नगर के नाम से भी जाना जाता है। कंत नगर एक प्राचीन शहर है जो गंगा में विलीन हो गया। यहाँ रहने वाली सिख संगत ने वहाँ से मिट्टी लाकर लच्छमीपुर नगर की स्थापना की थी। गुरुद्वारा लच्छमीपुर में सिख विरासत की याद दिलाते हैं ये स्मारक गुरु गोबिंद सिंह जी द्वारा लिखित तिथि रहित हुकमनामा, तख्त श्री हरमंदिर जी पटना साहिब द्वारा जारी हुकमनामा, गुरु ग्रंथ साहिब जी का लेमिनेशन करवायी 248 पृष्ठों की हस्तलिखित बीर, प्राचीन हथियार (दो खंडे और पाँच छोटी क्रिपाने, अमृत चकाने वाला खंडा, सलोतर-मोटी लकड़ी का डंडा, प्राचीन श्री साहिब, तीन कटारें, तीन चक आदि) और श्री गुरु सिंह सभा अमृतसर साहिब द्वारा लिखित एक प्रेरणादायक पत्र। सराए और लंगर के अलावा बच्चों को गुरुमुखी, कीर्तन और अन्य धार्मिक विद्याएँ प्रदान की जाती है।

पश्चिम बंगाल

मालदा: यह शहर बिहार के काडागोला से कलकत्ता के रास्ते में लगभग 125 किमी की दूरी पर स्थित है। पंडित तारा सिंह नरोत्तम इस शहर में एक गुरुधाम होने की पुष्टि करते हैं। 14 मेजर गुरुमुख सिंह कहते हैं कि पुराने मालदा शहर में गुरु तेगबहादुर की स्मृति में 'गुरुद्वारा नीमा सराय श्री गुरु तेगबहादुर' मौजूद था। नदी के उस पार नए मालदा नगर के बसने से पुराने शहर का वैभव जाता रहा और आम लोग उठकर नए शहर में बस गए। रख-रखाव के अभाव में गुरुधाम जर्जर हो गया। 1960 में एक सड़क निर्माण करने

वाले ठेकेदार ने इस गुरुधाम का पुनर्निर्माण किया और उसके चारों ओर एक दीवार का निर्माण किया। जिन गुरसिखों ने बाद में नए मालदा नगर में गुरुद्वारे श्री सिघ सभा का निर्माण किया, उन्होंने भी पुराने गुरुधाम की सेवा करवा दी। इसका नाम श्री प्रयाग साहिब रखा गया।

कलकत्ता : कलकत्ता पूर्वोत्तर भारत का एक प्रमुख व्यापारिक केंद्र है। यदि पंजाब के स्वतंत्रता सेनानियों को काले पानी से दंडित किया जाता, तो कैदियों को इस शहर से समुद्र के रास्ते अंडमान ले जाया जाता। इसी शहर में कामागाटा मारु जहाज के शहीदों का स्मारक स्थित है। इस शहर को गुरु नानक देव जी और गुरु तेगबहादुर जी की चरण छोह प्राप्त है, जिनकी याद में महात्मा गांधी रोड पर बड़ा बाजार में एक गुरुद्वारा पक्की संगत है। स्थानीय परंपरा बताती है कि गुरु नानक ने 1510 ई० में इस स्थान का दौरा किया था।

इसके बाद, असम की यात्रा से लौटने पर, गुरु तेगबहादुर जी ने इस स्थान पर चरण रखे। वर्तमान में यह गुरु धाम सात मंजिला इमारत में स्थित है। लंगर और रहने की व्यवस्था का प्रबंध है और इसकी सेवा-सम्भाल एक स्थानीय समिति द्वारा रखा की जा रही है।

गुरुद्वारों से जुड़े सूत्र पश्चिम बंगाल के मखसूदाबाद में एक गुरुद्वारे का भी प्रमाण देते हैं, लेकिन काफी कोशिशों के बाद भी कोई पुख्ता जानकारी नहीं मिल पाई है।

बांग्लादेश

दिसंबर 1971 में, पश्चिमी पाकिस्तान पूर्वी पाकिस्तान से अलग हो गया। पूर्वी पाकिस्तान बांग्लादेश के रूप में उभरा। पूर्वी पाकिस्तान में गुरुधाम को सरकार ने अपने कब्जे में ले लिया, जिसके कारण कई गुरुधाम गायब हो गए। जनवरी 1972 में, ढाका के गुरुद्वारा नानकशाही में, बांग्लादेश के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति सैयद नजरूल इस्लाम ने पहला भाषण दिया जिसमें सभी धर्मों के लोगों की धार्मिक स्वतंत्रता की घोषणा की गई थी। गुरुधामों के रख-रखाव का रास्ता खुल गया और कैप्टन भाग सिंह, जोगिंदर सिंह जोगी और अन्य उत्साही सिखों ने जनरल जगजीत सिंह अरोड़ा से मुलाकात की जिन्होंने बांग्लादेश को आजाद कराया था और धार्मिक स्थलों का रखरखाव शुरू किया था। पाँच गुरुधाम वर्तमान में बांग्लादेश में संरक्षित हैं-गुरुद्वारा नानकशाही रमना, वाका; गुरुद्वारा संगत दोला, ढाका: गुरुद्वारा सिख मंदिर एस्टेट, चटगाँव गुरुद्वारा पंजाबी लेन. पहाड़तली और गुरुद्वारा साहिब गुरु नानक मंदिर, मैमनसिंह। बांग्लादेश में धार्मिक स्थलों पर जाने वाले संगतों को उनकी एक झलक दो जाती है। बांग्लादेश में गुरुद्वारा संगत टोला एकमात्र ऐसी जगह है जिसे गुरु तेगबहादुर जी की चरण छोह प्राप्त है।

गुरुद्वारा संगत टोला, ढाका: यह गुरुद्वारा ढाका के बांग्ला बाजार में स्थित है। यह भाई बुलाकी दास का घर था जहाँ गुरु तेगबहादुर जी ने लंबे समय तक रहे थे। भाई बुलाकी दास और भाई नत्था इस क्षेत्र में गुरु के घर के प्रचारक थे और उनके प्रयासों ने कई लोगों को सिख धर्म में परिवर्तित करने के लिए प्रेरित किया। जब शहर के आसपास रहने वाली संगत को गुरु जी के शहर में आने की खबर मिली, तो बड़ी संख्या में सिख संगत ने उनसे मिलने आने लगे। संगत के मन में प्रेम की भावना को देखते हुए. गुरु ने शहर को 'सिखी का कोठा' बनाने का वादा किया:

गुर सिखन भजन किया गुर आगे।

बिगसै दियाल किरपा रस पागै।

बरबचन मुखारबिंद सौ भाखा।

मम सिखी का कोठा ढाका।

भाई बुलाकी की बूढ़ी माँ ने गुरु जी को हाथ से बना एक बहुमूल्य वस्त्र भेंट किया। कहा जाता है कि माता जी ने भी गुरु जी का चित्र बनाया था।

असम

असम भारत के उत्तर पूर्व में हिमालय की गोद में स्थित है। इसने चाय, रेशम और तेल के उत्पादन और व्यापार में प्रमुखता प्राप्त की है। मध्य युग में, महिलाओं को तंत्र शिक्षा में कुशल माना जाता था। यहाँ से होकर ब्रह्मपुत्र नदी बहती है, जिसके किनारे पर धुबरी शहर है, जहाँ गुरु नानकदेव जी और गुरु तेगबहादुर जी की चरण छोह प्राप्त स्थान हैं।

गुरुद्वारा श्री गुरु तेगबहादुर साहिब, धुबरी: कहा जाता है कि इस शहर का नाम नेताई धोबन के नाम पर धुबरी रखा गया है। ऐसा कहा जाता है कि जब गुरु तेगबहादुर जी इस स्थान पर आए तो तंत्र शिक्षा की विशेषज्ञ नेताई धोबन ने पहले गुरु जी पर पत्थर फेंका और फिर गुरु जी पर एक पीपल के पेड़ से प्रहार किया लेकिन इससे उन्हें कोई नुकसान नहीं हुआ। आखिरकार, धोबन ने गुरु जी माफी मांगी और उनके नाम पर धुबरी शहर का नाम रखा। पहले गुरु नानक देव जी यहाँ आए थे जिनके बाद इस स्थान को दमदमा साहिब भी कहा जाता है।

गुरु तेगबहादुर जी राजा राम सिंह के साथ यहाँ आए और असम के राजा चक्रध्वज के साथ सुलह कर शांति स्थापित की। इस स्थान की सेवा स्वयं गुरु तेगबहादुर जी ने की थी। मैकालिफ ने इस गुरुधाम से संबंधित एक शिलालेख का हवाला देते हुए लिखा "उपायुक्त कामरूप ने मुझे एक पैम्फलेट भेजा है।" जिसमें लिखा है कि भाई जय सिंह जी महंत धुबरी गुरुद्वारा असम के पास एक मुगल सम्राट द्वारा जारी फरमान था, जिसमें गुरुद्वारा स्थित जमीन आवंटित की गई थी। लेकिन भाई जय सिंह अपने साथ फरमान को लेकर गुरुद्वारा के पुनर्निर्माण के लिए चंदा लेने अमृतसर गए। कुछ ही समय बाद, भाई जय सिंह का अमृतसर के पास निधन हो गया और आदेश खो गया। कृपया महंत हरिमंदर से पूछें कि क्या वह भाई जय सिंह और फरमान के बारे में कुछ जानते हैं क्योंकि फरमान धुबरी के सिखों के लिए एक सनद है।" पूर्व में यह गुरुधाम गुरु तेगबहादुर साहिब जी की चरण छोह प्राप्त अमित याद दिलाता है।

ग्रंथ

1. स्वरूप सिंह कौशिश, गुरु किया सखियाँ, संपादक प्यारा सिंह पदम, प्र. 58.

2. ज्ञानी ज्ञान सिंह, त्वरिख गुरु खालसा, भाग, पु. 694.
3. फौजा सिंह, गुरु तेगबहादुर: तीर्थ स्थान, परंपराएँ और स्मारक, पू 225.
4. Gurmukh Singh, Historical Sikh Shrines.p. 315.
- 5 . भाई संतोख सिंह, श्री गुरु प्रताप सूरज ग्रंथ, रासी 11, 47.2.
6. सरूप दास भल्ला, महिमा प्रकाश, भाग।।, खंड 2. साखियाँ पातशाही नौवीं, साखी 8. पू. 663.
7. In the middle of the town is the house of the celebrated Mata Maluk Das, otherwise Known Chandra Maluk Shahi, an ascetic who died in 1682 and is said to have received from Aurangzeb the village of Sirathu in revenue-free tenure- His disciples have a monastery in Kara the present Mahant being jodhya Prasad, in whose possession is a book narrating the miracles of the saint and his adventures with the emperor. H.R. Nevill, ed., Allahabad: A Gazetteer,vol, xxiii, P.250.
8. ज्ञानी ज्ञान सिंह, पंथ प्रकाश, अध्याय 34, बंद 151
- 9 . भाई काहन सिंह नाभा, गुरुशब्द रत्नाकर महान कोष, पू. 802
- 10' भाई काहन सिंह नाथा, गुरुशब्द रत्नाकर महान कोष, पू. 314
11. Gurmukh Singh, Historical Sikh Shrines 320
12. भाई काहन सिंह नाभा गुरुशब्द रत्नाकर महान कोष, पू. 550 भाई धना सिंह चहल पटियालवी, गुरु तीरथ साइकिल यात्रा, संपादक 13. चेतन सिंह, पू. 133
14. पंडित तारा सिंह नरोत्तम, गुरु तीरथ संग्रह, पृ. 120
15. Gurmukh Singh, Historical Sikh Shrines 336
16. सरूप दास भल्ला, महिमा प्रकाश, भाग। खंड 2. साखियाँ पातशाही नौवीं, संपादक उत्तम सिंह भाटिया, साखी 15. पु. 689.
17. बडा लिखारी लिखायी माई. सतगुरु हजूर ने तसबीर लिखायी। सरूप दास भल्ला, महिमा प्रकाश, भाग।।, खंड 2. साखियाँ पातशाही नौवीं, संपादक उत्तम सिंह भाटिया, साखी 15. 691.
18. खालसा समाचार, 18 फरवरी, 1903, पू. ।